(32)

उज्जैन और उसका गौरवशाली अतीत

(Ujjain and Its Glorious Past)

सम्पादक

डॉ. रामकुमार अहिरवार

एम. ए. (स्वर्ण पदक), पीएच. डी.

प्राध्यापक

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व अध्ययनशाला

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

आर बी एस ए पब्लिशर्स

एस एम एस हाइवे, जयपुर-302 003

(32)

20 महाकवि बाण भट्ट प्रणीत कादम्बरी में अभिव्यक्त उज्जयिनी का स्वरूप

मुरली मनोहर पाठक

संस्कृत के गद्यसाहित्य में महाकवि बाणभट्ट का अप्रतिम स्थान है। कादम्बरी न केवल बाणभट्ट की ही, अपितु समस्त संस्कृत वाङ्मय की अनुपम कृति है। इसके पूर्व बाणभट्ट ने ऐतिहासिक गद्यकाव्य के रूप में 'हर्षचरित' की रचना कर ली थी। उन्होंने हर्षचरित को स्वयं ही आख्यायिका के रूप में उपन्यस्त किया है - "करोम्याख्यायिकाम्भोधौ जिह्वाप्लवनचापलम्"।[1] कादम्बरी को उन्होंने कथा के रूप में प्रस्तुत किया है - " निबद्धेयमतिद्वयी कथा"।[2] कादम्बरी-कथा का गुम्फन बाणभट्ट ने गुणाढ्यकृत 'बृहत्कथा' के आधार पर किया है। उसका 'मकरन्दोपाख्यान' ही इसका उत्स है। उसी उपाख्यान को कवि ने अपने कवित्वप्रकर्ष से चामत्कारिक रूप में प्रस्तुत किया है। कथा के बीच में आए विभिन्न सन्दर्भों के आधार पर तत्कालीन परिस्थितियों का आकलन किया जा सकता है। उज्जयिनी-वर्णन इन सन्दर्भों में विशेष महत्त्वपूर्ण है। वस्तुतः कादम्बरी-कथा वहीं से प्रारम्भ होती है। उस वर्णन के आधार पर उज्जयिनी के तत्कालीन स्वरूप को निम्नलिखित बिन्दुओं के आलोक में समझा जा सकता है -

भौगोलिक स्वरूप -

बाणभट्ट के द्वारा उज्जयिनी के लिए प्रयुक्त कतिपय विशेषण इसकी भौगोलिक स्थिति को दर्शाते हैं। यह अवन्ति जनपद में अवस्थित थी। बाण ने इसे तीनों लोकों के तिलक एवं सत्ययुग के उत्पत्तिस्थान के रूप में चित्रित किया है।[3] यहाँ तक कि इसे भगवान् महाकालेश्वर ने स्वयं अपने निवास के लिए मानों दूसरी पृथिवी के रूप में उत्पन्न किया था।[4] यह आकाशमण्डल को छूने वाली, चूने से पुती हुई चहारदीवारी से घिरी हुई थी।[5] इसके अतिरिक्त यह रसातल तक गहरी खाई से भी आवृत थी।[6] इस प्रकार उज्जयिनी राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत सुरक्षित थी। यह निरन्तर उठ रही तरङ्गों वाली क्षिप्रा नदी से वेष्टित थी, जो अपनी लहरों के कारण ऐसी प्रतीत होती थी, मानों आकाश को प्रक्षालित कर रही हो।[7] इससे यह ज्ञात होता है कि बाण के काल में क्षिप्रा में प्रभूत जल था। इसके अतिरिक्त उज्जयिनी में सहस्रसंख्यक सरोवर भी थे, जिनमें कमल एवं कुमुद खिले रहते थे तथा जो मछलियों के दिखाई देते रहने से अत्यंत रमणीय थे।[8] कवि ने इन सरोवरों की उपमा इन्द्र की हजार आँखों से दी है। इस प्रकार पर्याप्त जल होने के कारण यहाँ अच्छी कृषि की उद्भावना की जा सकती है।

वास्तुविन्यास -

कादम्बरी के उज्जयिनी-वर्णन में वास्तुविषयक सामग्री प्रभूत मात्रा में उपलब्ध होती है, जिससे ज्ञात होता है कि उस समय स्थापत्य पर विशेष ध्यान दिया जाता था। इसके अन्तर्गत महाविपणिपथों के अतिरिक्त बाण ने चित्रशालाओं से खचित महाभवनों, नगर में स्थित देवमन्दिरों तथा नगर के बाहर एवं भीतर स्थित उद्यानों का विशेष रूप से उल्लेख किया है। पहले गहरी खाई और चहारदीवारी से घिरी उज्जयिनी के भीतरी भाग को वास्तुविदों ने चौड़े राजमार्गों का निर्माण कर अनेक भागों में विभक्त कर दिया था। 'महाविपणिपथैरुपशोभिता'[9] इस विशेषण द्वारा इसका अनुमान

लगाया जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि चौड़ी सड़कों के दोनों ओर विभिन्न प्रकार की दूकानें सजाई जाती थीं। कवि ने निदर्शन के रूप में मात्र रत्नों के बाजारों का उल्लेख किया है, जिसे 'सराफा' के रूप में अवगत किया जा सकता है। यहाँ बेचने के लिए शंख, शुक्ति, मोती, मूँगे तथा मरकतमणि (पन्ना) के ढेर लगे थे एवं सोने के चूर्ण बिखरे पड़े थे।[10]

उज्जयिनी के प्रासाद इतने विशाल और ऊँचे थे, जैसे-मानों वह पर्वतों से युक्त हों।[11] इन विशाल महलों के ऊपरी तलों पर बने भवनों को देखकर ऐसा लगता था, जैसे ये विभिन्न मुहल्ले (शाखानगर) हों।[12] वहाँ की चित्रशालाओं, की भित्तियों पर सुरों, असुरों, सिद्धों, गन्धर्वों और विद्याधरों के सुन्दर एवं सजीव चित्र बने थे, जिन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता था, मानों निरन्तर होने वाले उत्सवों में प्रमदाओं को देखने के कुतूहल से आकाशतल से उतरी हुई देवों के विमानों की पंक्तियाँ हों।[13] वस्तुतः इन चित्रों के माध्यम से पृथ्वी और आकाश के मध्यवर्ती जगत् को उकेरा गया होगा, जिसे कवि ने 'दर्शितविश्वरूपेव चित्रभित्तिभिः'[14] अर्थात् चित्रभित्तियों के माध्यम से उज्जयिनी मानों विश्व के रूपों का दर्शन कराती थी-इस विशेषण द्वारा रेखाङ्कित किया है। महाभवनों के चारों ओर प्रत्येक दिशा में घने केले के वन विकसित किए गए थे तथा अमृत के फेन-समूह के समान श्वेत वर्ण के हाथी दाँतों के छज्जे बनाए गए थे।[15] वास्तु की दृष्टि से उज्जयिनी में सौधशिखर[16], सिन्दूरमणि के फर्श,[17] वैदूर्यमणि की भूमि[18] मरकत वेदिका,[19] सौधों के अन्दर संगीतशाला[20], स्वर्णजटित कमरे[21], अभिषेक भूमि[22], धारागृह[23], इन्द्रनीलमणिवातायन[24], मुक्ताप्रालम्ब[25], स्फटिक की भित्तियाँ[26], सूर्यकान्तमणि का सन्निधान[27] इत्यादि विशेष रूप से ध्यातव्य हैं। वहाँ धारागृहों में शोभा के लिए नागदन्त या हाथी-दाँत की खूटियों पर चँवर लटकाए जाते थे।[28]

तत्कालीन उज्जयिनी की रचना में स्थापत्य की दृष्टि से देवताओं के विशाल मन्दिरों को लिया जा सकता है। इन मन्दिरों में भगवान् श्री महाकालेश्वर का मन्दिर अन्यतम है, क्योंकि उज्जयिनीवर्णन के प्रारम्भिक एवं अन्तिम दोनों ही भागों में कवि ने स्वयं इसका संकेत किया है।[29] जहाँ तक अन्य मन्दिरों का प्रश्न है, वे उन चौराहों पर बनाए गए थे, जहाँ महाविपणिपथ या राजमार्ग आपस में मिलते थे। इन मन्दिरों के शिखर स्वर्णमय थे।[30] बाण के अनुसार जिस प्रकार देवताओं की माता अदिति हजारों देवों से सेवित थी, उसी प्रकार यह उज्जयिनी भी हजारों देवमन्दिरों से अलंकृत थी।[31]

बाणभट्ट ने भवनों के अन्दर स्थित उद्यानों का वर्णन करते हुए उन्हें मतवाले, अतएव गुनगुनाते हुए बहुसंख्यक भ्रमरों के कारण घना एवं अन्धकारपूर्ण निरूपित किया है।[32] बाण ने न केवल गृहारामों की ही चर्चा की है, अपितु उन्होंने बाह्योद्यानों का भी सुन्दर चित्रण किया है। ये उपवन गाँवों की सीमाओं पर लगाए जाते थे, जिनमें केतकी की संख्या अधिक होती थी। चूने से पुती हुई वेदियों वाले कुओं से निरन्तर चलते रहने वाले रहटों से सिंचाई होने के कारण ये उपवन अत्यन्त हरे-भरे थे।[33] इस सन्दर्भ से यह ज्ञात होता है कि बाणभट्ट के काल में रहट लगाकर सिंचाई की जाने लगी थी। उज्जयिनी में सभा, आवसथ (छात्रावास), कूप, प्रपा, सेतुयन्त्र, आराम, सुरसदन इत्यादि वास्तु-स्थानीय केन्द्र अनेकत्र दृष्टिगत होते थे।[34] इस प्रकार उज्जयिनी का वास्तुविन्यास विलक्षण था।

आर्थिक स्वरूप -

महाकवि बाणभट्ट के उज्जयिनी-वर्णन के आधार पर वहाँ के नागरिकों की आर्थिक स्थिति

का आकलन किया जा सकता है। कवि ने विलासिजनों को 'कोटिसार'[31] एवं 'प्रकटितकनकपद्मराशि'[32] इन विशेषणों से विभूषित किया है, जिससे ज्ञात होता है कि वे लोग करोड़पति थे तथा उनके पास असंख्य स्वर्ण-मुद्राएँ थीं। उन्होंने सागर के सम्पूर्ण रत्नों का संग्रह किया था।[33] उनके घरों के फर्श मणिमय थे।[34] कहीं मरकतमणि की वेदियाँ बनी थीं, तो कहीं वैदूर्यमणि की भूमियाँ थीं। सभी के घर में सिन्दूरमणि, स्फटिक तथा सूर्यकान्त मणियाँ विभिन्न उपयोगों सहित उपलब्ध थीं।[35] युवतियाँ इतने रत्नजटित आभूषण पहनती थीं, जिनके प्रकाश के कारण रातें प्रातः कालीन अरुणिमा से युक्त सी प्रतीत होती थीं।[36] उज्जयिनी के विशेषणभूत 'सदासन्नवसुधारा'[37] पद से जहाँ एक ओर भूपरों का उल्लेख है, तो दूसरी ओर वहाँ भूमि के अन्दर यत्नपूर्वक रखे हुए रत्नों का भी संकेत प्राप्त होता है, जिनका संग्रह नागरिकों ने संसार के अनेक भागों से किया था। इस प्रकार उस समय उज्जयिनी का आर्थिक स्वरूप अत्यंत उन्नत था।

सामाजिक स्वरूप -

बाणभट्ट के काल में उज्जयिनी का सामाजिक स्वरूप भी आदर्श था। जनता परस्पर प्रेम और सौहार्दपूर्ण वातावरण में रहती थी। सामाजिक विद्वेष नहीं था। ब्राह्मणादि सभी वर्ण अपने-अपने कर्मों में निरत रहते थे। वर्ण-परीक्षा जैसी कोई स्थिति निर्मित नहीं होती थी।[42] लोग नैतिकता के मानदण्डों का पालन करते थे। सभी अपनी पत्नी से सन्तुष्ट रहते थे।[43] वहाँ मनोरंजन के लिए सोने के पासों से द्यूतक्रीडा आयोजित होती थी।[44] वह उज्जयिनी अखण्डित चरित्र वाली थी[45] तात्पर्य यह है कि समाज चारित्रिक दृष्टि से उन्नत था। वहाँ के लोग वीर, विनयशील, प्रियभाषी, सत्यवादी, अभिरूप, अतिथियों का आदर करने वाले, स्वाभिमानी, धर्मप्रधान, महासत्त्व, परलोक की चिन्ता करने वाले, दानी, दक्ष, मुस्कराकर बोलने वाले, परिहास करने में दक्ष, उज्ज्वल वेश धारण करने वाले, सभी देशों की भाषाओं को जानने वाले, शान्तचित्त, सरल अन्तःकरण वाले तथा मित्रों का अनुवर्तन करने वाले थे।[46] इस प्रकार समाज में किसी प्रकार का असन्तोष नहीं था।

शिक्षा, कला एवं संस्कृति -

उज्जयिनी के नागरिकों ने उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त की थी। वहाँ सतत वेद-शास्त्रादि के स्वाध्याय की ध्वनि गूँजती रहती थी; जिससे इसके सारे पाप धुल गए थे।[48] लोग न केवल साहित्यिक एवं कलात्मक विषयों के ही पण्डित थे, अपितु उन्होंने सम्पूर्ण विज्ञानों के वैशिष्ट्यों का भी अध्ययन किया था।[47] उनका भाषाज्ञान भी सार्वदेशिक था। वे वक्रोक्ति, आख्यायिका, अख्यान इत्यादि से पूर्णतः परिचित थे। उन्हें सभी लिपियों का ज्ञान था। महाभारत, रामायण, पुराण इत्यादि से उन्हें अधिक अनुराग था। बृहत्कथा से भी वे परिचित थे। द्यूत इत्यादि सभी कलाओं में पारंगत थे। शास्त्रों से उनका बहुत लगाव था। भरत के नाट्यशास्त्र से भी वे परिचित थे।[49] उज्जयिनी में कला, साहित्य एवं संगीत की निरन्तर साधना चलती रहती थी। संगीत केवल पुरूषवर्ग तक ही सीमित नहीं था, बल्कि वहाँ की स्त्रियाँ भी संगीत में लीन रहती थी। वहाँ उत्तुंग महलों की गोद में संगीत में आसक्त स्त्रियों का गीत इतना मधुर होता था, जिसकी ध्वनि से आकृष्ट होकर सूर्य के रथ के घोड़े मानो सिर नीचे कर के उसका आनन्द लेते थे।[50] ऐसा प्रतीत होता है कि स्त्रियाँ महलों के ऊपरी भाग में ही एकान्त वास करती थीं तथा संगीत इत्यादि की साधना करती थीं। वे सौधशिखरों पर शयन भी करती थीं, जैसा कि कवि ने

"सौधशिखरशायिनीनाम्"[50] इस विशेषण द्वारा संकेत किया है। प्रभातवेला में शुक-सारिकाएँ मधुर गीत गाती थीं।[51] वहाँ भवनों में पाले गए कलहंसों का कोलाहल सभी का मनोरञ्जन करता था।[52] इसी प्रकार मतवाले मयूर भी अपने पंखों को गोलाकार करके नाचते-गाते रहते थे।[53] वहाँ काम भी राजसी या तामसी प्रकृति का न होकर शुद्ध सात्त्विक था। प्रत्येक घर में सौभाग्यसूचक, बजती हुई छोटी घण्टियों से युक्त लाल पताकाओं वाले ध्वज दिखाई देते थे, जिनमें लाल चँवर बँधे रहते थे तथा जो मृगों एवं मछली के चिह्नों से युक्त थे। इन ध्वजों से कामदेव की सात्त्विक पूजा परिलक्षित होती थी।[54]

राजनीतिक स्थिति -

बाणभट्ट कृत उज्जयिनी-वर्णन में तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का कोई महत्त्वपूर्ण संकेत तो नहीं प्राप्त होता है, किन्तु एक विशेषण-'प्रधानपुरूषोपेतन'[55] के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रशासन प्रधान पुरूष या विभिन्न क्षेत्रों के मुखिया लोगों की सहायता से चलता होगा। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार -"वहाँ निगम, श्रेणी, पूग, पाषंड कितने ही प्रकार के सार्वजनिक संगठन थे और सबके अपने नैगम, श्रेष्ठी, चौधरी और मुखिया होते थे।"[56]

दार्शनिक स्वरूप -

बाण के काल में उज्जयिनी दार्शनिक चिन्तन की दृष्टि से भी समृद्ध थी। यहाँ के लोग परम आस्तिक थे, इसका ज्ञान हमें मन्दिरों की प्रचुर संख्या से हो जाता है। यहाँ सैद्धान्तिक रूप से आस्तिक एवं नास्तिक दोनों प्रकार के दर्शनों का प्रचार-प्रसार था। कवि ने आस्तिक दर्शन के निदर्शन के रूप में सांख्य-दर्शन को उपन्यस्त किया है। जिस प्रकार सांख्य प्रकृति और पुरूष पर विचार करता है, उसी प्रकार उज्जयिनी के लोग प्रधान अर्थात् मुख्य पुरूषों से युक्त थे।[57] नास्तिक दर्शनों में कवि ने बौद्ध एवं जैन दोनों का उल्लेख किया है। उज्जयिनी के नागरिक न केवल बौद्ध दर्शन से ही परिचित थे, अपितु उनके निकायभेद के प्रसिद्ध सिद्धान्त 'सर्वास्तिवाद'[58] से भी परिचित थे। उन्होंने जीवों पर दया करना जैन धर्म से सीखा था।[59] इस प्रकार वैचारिक दृष्टि से भी उज्जयिनी सम्पन्न थी।

उपर्युक्त विवेचन से यह परिलक्षित होता है कि बाण ने श्लेष के माध्यम से उज्जयिनी के विभिन्न वैशिष्ट्यों को अपनी लेखनी से प्रकाशित किया है। इन संकेतों को गम्भीर चिन्तन तथा भाषिक वैदग्ध्य के आधार पर समझने की आवश्कता है। उनके युग में वस्तुतः वह अपने इन्हीं वैशिष्ट्यों के कारण प्रख्यात थी। इस दृष्टि से कवि के द्वारा उसका 'सकलत्रिभुवनललामभूता'[60] यह विशेषण दिया जाना नितान्त युक्त प्रतीत होता है।

संदर्भ ग्रंथ -

1. बाणभट्ट - हर्षचरित, प्रस्तावना
2. बाणभट्ट - कादम्बरी, प्रस्तावना, श्लोक 20
3. सकलत्रिभुवनललामभूता, प्रसवभूमिरिव कृतयुगस्य.....अवन्तीषु उज्जयिनी नाम नगरी। - कादम्बरी, पृ. 109-116
4. अपरेव पृथिवी समुत्पादिता। वही, पृ.109
5. सुधासितेन प्राकारमण्डलेन परिखृता। वही, पृ. 109

6. रसातलगभीरेण परिखावलयेन परिवृता। पृ. 109
7. सततसमाबद्धतरलभृकुटिलेखया खमिव क्षालयन्त्या सिप्रया परिक्षिप्ता। वही, पृ. 109
8. सहस्रसंख्यैरुद्भासिता सरोभिः। वही, पृ. 111
9. वही, पृ. 110
10. प्रकटशङ्खशुक्तिमुक्ताप्रवालमरकतमणिराशिभिरचामीकरचूर्णसिकता निकर-निचितैः। वही, पृ. 109
11. सशैलेव प्रासादैः। वही, पृ. 114
12. सशाखानगरेव महाभवनैः। वही, पृ. 114
13. सुरासुरसिद्धगन्धर्वविद्याधरोरगाध्यासिताभिश्चित्रशालाभिरविरतोत्सव-प्रमदावलोकनकुतूहलादम्बरतलादवतीर्णाभिर्दिव्यविमानपंक्तिभिरिवालङ्कृता। वही, पृ. 110
14. वही, पृ. 115
15. अविरलकदलीवनकलितामिरमृतफेनपुञ्जपाण्डुराभिर्दिशिदिशि दन्तधवलिकाभि र्धवलीकृता वही, पृ. 112
16. सौधशिखरशायिनीनाम्, वही, पृ. 118
17. सिन्दूरमणिकुट्टिमेषु, वही पृ.116
18. वैदूर्यमणिभूमिषु, वही, पृ. 117
19. मरकतवेदिकासु, वही, पृ. 116
20. सौधोत्सङ्गसंगीतसंगिनीनाम्, वही, पृ.116
21. जातरूपक्षया, वही, पृ. 114
22. प्रस्तुताभिषेकभूमिरिव, वही, पृ. 115
23. धारागृहेषु, वही, पृ. 111
24. इन्द्रनीलवातायनविवरेषु, वही, पृ. 117
25. मुक्ताप्रालम्बेषु, वही, पृ. 117
26. स्फटिकभित्तिप्रभासु, वही, पृ. 117
27. सूर्यकान्तोपलेषु, वही, पृ. 117
28. अवलम्बितचामरनागदन्तधवलगृहा, वही, पृ. 115
29. भगवता महाकालाभिधानेन.....महाकालाभिधःस्वयं वसति, वही पृ. 109-120
30. कनकमयामलकलशशिखरैः .....अमरमन्दिरैर्विराजितश्रृङ्गाटका, वही, पृ. 110
31. अदितिरिवदेवकुलसहस्रसेव्या, वही, पृ. 115
32. मदमुखरमधुकरकुलान्धकारितनिष्कुटा, वही. पृ. 110
33. सुधावेदिकोपशोभितोदपानैरनवरतचलितजलपटीयन्त्रसिच्यमानहरितोपल नान्धकारैः केतकीधूलिधूसरैरुपशल्यकैरुपशोभिता, वही, पृ. 110
34. सभावसथकूपप्रपारामसुरसदनसेतुयन्त्रप्रवर्तकेन, वही, पृ. 112

35. कोटिसारेण, वही, पृ. 112
36. प्रकटितकनकपद्मराशिना, वही, पृ. 112
37. उद्धृतसमग्रसागररत्नसारेण, वही, पृ. 113
38. मणिकुट्टिमेषु, वही, पृ. 118
39. वही, पृ. 116-117
40. कामिनीनां भूषणप्रभाभिः बालातपपिञ्जरा इव रजन्यः, वही, पृ. 118
41. वही, पृ. 115
42. वर्णपरीक्षा कनकानाम्, वही, पृ. 119
43. अभिरूपेणापि स्वदारसन्तुष्टेन, वही, पृ. 113
44. दर्शितहरिण्याक्षपाता, वही, पृ. 116
45. द्रष्टव्य, वही, पृ. 113-114
46. सततप्रवृत्ताध्ययनध्वनिध्वस्तकल्मषा, वही, पृ. 111
47. सकलविज्ञानविशेषविदा, वही, पृ. 113
48. द्रष्टव्य, वही पृ. 113-114
49. यस्यामुत्तुङ्गसौधोत्सङ्गसंगीतसंगिनीनामतिमधुरेणगीतखोणावेणाकृष्यमाणाधोमुखरथतुरङ्गः, वही, पृ. 116
50. वही, पृ. 118
51. यस्यां च निशावसानप्रबुद्धस्य तारतारमपि पठतः पञ्जरभाजः शुकसारिका समूहस्य..... प्रभात मङ्गलगीतयः, वही पृ. 118-119
52. भवनकलहंसकुलकोलाहलः, वही पृ. 118
53. मत्तमयूरैर्मण्डलीकृतशिखण्डैस्ताण्डवव्यवसनिभिराक्ष्यमानकेकाकोलाहला, वही, पृ. 111
54. रणितसौभाग्यपण्टैरालोहितांशुकपताकैराबद्धरक्तचामरैर्विद्रुममयैः प्रतिगृहमुच्छ्रितैर्मकराङ्कैः सदनकेतुयष्टिभिः प्रकाशितमकध्वजपूजा, वही, पृ. 111
55. वही, पृ. 114
56. अग्रवाल, वासुदेव शरण - कादम्बरी (एक सांस्कृतिक अध्ययन), पृ. 59
57. सांख्यागमेनेवप्रधान पुरुषोपेतेनाकादम्बरी, पृ. 114
58. बौद्धेनेव सर्वास्तिवादशूरेण, वही, पृ.114
59. जिनधर्मेणेव जीवानुप्पिना, वही, पृ. 114
60. वही, पृ. 109

◆◆◆◆◆